‘कथा एक कंस की’ नाटक की समीक्षा

डॉ. गरिमा तिवारी
(सहायक प्राध्यापक)
हिंदी विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी - ८४५४०१, बिहार
E-mail: garimatiwari@mgcub.ac.in

HIND4007: हिंदी नाटक एवं रंगमंच

विषय-सूची

- दया प्रकाश सिन्हा : एक सामान्य परिचय
- ‘कथा एक कंस की ’ नाटक का कथ्य
- ‘कथा एक कंस की ’ नाटक की प्रतीकात्मकता
- ‘कथा एक कंस की ’ नाटक का आधुनिक भावबोध
- निष्कर्ष

दया प्रकाश सिन्हा : एक सामान्य परिचय

- 'कथा एक कंस की' नाटक की रचना हिंदी के ख्यातिलब्ध नाटककार दया प्रकाश सिन्हा ने सन १९७६ में की।
- दया प्रकाश सिन्हा ने एक नाटककार, निर्देशक, अभिनेता के रूप में भारतीय रंगमंच को अपना बहुमूल्य योगदान दिया है।
- इन्होंने कई नाटक लिखे जिनमें सांझ-सवेरा (१९५८), मन के भँवर (१९६०), अपने अपने दाँव (१९६३), मेरे भाई मेरे दोस्त (१९७१), इतिहास चक्र (१९७२), ओह अमेरिका (१९७३), सीढियाँ (१९९०) आदि महत्वपूर्ण हैं।
- इन्होंने न सिर्फ नाटक लिखा अपितु उन नाटकों का रंगमंच पर सफलतापूर्वक मंचन भी किया। कुछ नाटकों में इन्होंने अभिनय भी किया।
- दया प्रकाश सिन्हा जी के इस योगदान के लिए उन्हें संगीत नाटक अकादमी सम्मान, साहित्यकार सम्मान से नवाजा गया।

‘कथा एक कंस की ’ नाटक का कथ्य

- ‘कथा एक कंस की’ नाटक में दया प्रकाश सिन्हा जी ने आम जनमानस में रचे बसे कृष्ण और कंस की मिथकीय कथा को आधुनिक जीवनगत सन्दर्भों और भावबोध के अनुरूप ढाल कर प्रस्तुत किया है।

- मिथक के सन्दर्भ में अपनी मान्यता को स्पष्ट करते हुए सिन्हा जी ने लिखा है – “मिथक का वर्तमान सन्दर्भ में नया अर्थ निकाला जा सकता है किन्तु उसकी प्रमुख घटनाओं तथा चरित्रों को बदला नहीं जा सकता। मिथक के निश्चित फ्रेम के भीतर ही उलटफेर की जा सकती है, किन्तु मूल रूप में मिथक परिवर्तित नहीं किया जा सकता।”

- अतः इस नाटक में दया प्रकाश सिन्हा ने अनावश्यक घटनाओं और पात्रों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत नहीं किया है।

- कंस द्वारा अपनी बहन देवकी का विवाह यदुवंशी वासुदेव से करना और देवकी के आठवें पुत्र द्वारा अपने वध की भविष्यवाणी सुनकर देवकी और वासुदेव को कारागार में डाल देने की घटना का उल्लेख महाभारत एवं पुराणों में भी है।

- देवकी के आठवें पुत्र के रूप में श्री कृष्ण जन्म लेते हैं और कंस का वध करके मथुरा की गद्दी उग्रसेन को सौंप देते हैं। संक्षेप में यही इस नाटक का कथ्य है।

- लेकिन इस कथ्य को नाटककार ने आधुनिक सन्दर्भों से जोड़ा है और इसके लिए उन्होंने कुछ घटनाओं और प्रसंगों में फेरबदल किया है।

- इस परिवर्तन को उन्होंने इस नाटक के प्रारंभ में व्याख्यायित किया है – "नाटक आरंभ करते समय मेरे सामने मिथक के उपयोग और विवेचन का प्रश्न था। मिथक का वैसा का वैसा ही उपयोग आधुनिक वैज्ञानिक युग में अर्थहीन होता है। अतएव यह आवश्यक था कि नाटक को समसामयिक काल से जोड़कर आधुनिक चेतना के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया जाए।"

- इससे स्पष्ट है कि कंस की कथा को वर्तमान सन्दर्भों से जोड़ना ही नाटककार का मुख्य उद्देश्य है।

‘कथा एक कंस की ’ नाटक की प्रतीकात्मकता

- कंस और कृष्ण की पौराणिक कथा को दया प्रकाश सिन्हा जी ने आधुनिक भावबोध के अनुरूप ढाल कर प्रस्तुत किया है । अतः इस नाटक के पात्र प्रतीकात्मक अर्थ रखते हैं ।

- कंस एक निरंकुश, आततायी, अन्यायी और स्वेच्छाचारी शासक का प्रतीक है जो शासन विस्तार की प्रचंड लालसा रखता है ।

- उसकी अंतिम परिणति के विषय में किसी विद्वान का मत है कि – “कंस का आचरण उस निरंकुश और सत्ताधारी शासक का प्रतीक है जो सत्ता और महत्वाकांक्षा में निहित त्रासदी को भोगता दिखाई देता है ।”

- श्री कृष्ण द्वारा कंस के स्वेच्छाचारी, निरंकुश शासन का अंत करना उन्हें जनाक्रोश के प्रतीक के रूप में स्थापित करता है ।

- जनाक्रोश की आंधी में बड़े-बड़े अत्याचारी शासक नहीं टिक पाते और यही जनाक्रोश कंस जैसे अत्याचारी शासक को उसकी अंतिम परिणति तक पहुंचाता है।

- श्री कृष्ण की वंशी मधुर तान का प्रतीक न होकर जन विद्रोह का प्रतीक है।

- निश्चित रूप से यह नाटक कंस और कृष्ण की पौराणिक कथा के माध्यम से निरंकुश, क्रूर शासक के जीवन की त्रासदी है और असत्य पर सत्य की, बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है।

‘कथा एक कंस की ’ नाटक का आधुनिक भावबोध

- ‘कथा एक कंस की’ नाटक एक पौराणिक नाटक मात्र नहीं है बल्कि यह आधुनिक भावबोध से ओत-प्रोत है।

- कंस द्वापरयुगीन निरंकुश शासक ही नहीं बल्कि आधुनिक अमानवीय, क्रूर शासन व्यवस्था का प्रतीक है।

- स्वयं नाटककार दया प्रकाश सिन्हा कंस के इस मिथकीय पात्र में निहित अनेक अर्थ-छवियों को उदघाटित करते हुए लिखते हैं – ‘मैंने कंस के द्वारा उन व्यक्ति-तंत्री स्वेच्छाचारी शासकों के निर्माण और विनाश का अन्वेषण किया है, जिसका समय-समय पर इतिहास के विभिन्न मोड़ों पर आविर्भाव हुआ है, चाहे वह कंस हो या औरंगज़ेब, या हिटलर या मुसोलिनी। ऐसे व्यक्ति आत्मसत्ता के विस्तार की उद्यम आकांक्षा से पीड़ित उस मार्ग पर बढ़ते ही जाते हैं और जहाँ से लौटना संभव ही नहीं होता और जिसकी परिणति आत्मनाश के अतिरिक्त और कुछ नहीं होती। ‘

- इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह नाटक पौराणिक पात्रों के माध्यम से आधुनिक जीवन का आख्यान प्रतीत होता है।

निष्कर्ष

- 'कथा एक कंस की' नाटक के प्रतिपाद्य को नरनारायण राय के इस कथन से समझा जा सकता है – "सत्ता किस प्रकार मनुष्य को भ्रष्ट करती है, उसे देवता से राक्षस बना देती है, स्वार्थी और दुर्दांत बना देती है, इस सबका जीवंत दस्तावेज है श्री सिन्हा का यह समीक्षा नाटक 'कथा एक कंस की' ।"

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1. ‘कथा एक कंस की’ – दया प्रकाश सिन्हा, नाटककार का दृष्टिकोण, प्रथम संस्करण की भूमिका

2. आधुनिक हिंदी नाटक : चरित्र सृष्टि के आयाम, डॉ. लक्ष्मी राय, संस्करण (१९७९)

3. नाटकनामा – नरनारायण राय

धन्यवाद